महत्वपूर्ण निर्देश

- पूर्ण शोध पत्र भेजने की अंतिम तिथि – 25 फरवरी 2021
- राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन Cisco-webex platform पर किया जायेगा
- राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु पंजीकरण नि:शुल्क है।

आयोजन समिति

1. डॉ मोनिका रोत
2. श्रीमती निर्मला मीणा
3. डॉ सुनील कुमार दलाल
4. डॉ प्रदीप कुमार खींचा
5. डॉ चेतना टिक्कीवाल
6. डॉ चक्रपाणि उपाध्याय
7. डॉ मनीराम मीणा
8. श्री रामकेश मीणा
9. श्रीमती मंजू खत्री

तकनीकी सहयोग समिति

अ. महाविद्यालय समिति

1. डॉ दिलीप पीपाड़ा
2. सुश्री प्रेषिका द्विवेदी
3. डॉ विजय कुमार चतुर्वेदी

ब. टी. ए. डी. समिति

1. गिरिराज कतिरीया
2. कल्पना पालीवाल

संरक्षक मंडल

डॉ पुष्पा सुखवाल
प्राचार्य
से.म.बि.
राज. महा., नाथद्वारा

श्री गोविन्द सिंह राणावत
निदेशक
टी. आर. आई. उदयपुर

डॉ प्रीति भट्ट
संयोजक
सहायक आचार्य (हिंदी)

डॉ शिल्पा मेहता
आयोजन सचिव
सहायक आचार्य (इतिहास)

ज्योति मेहता
समन्वयक
संयुक्त निदेशक, टी. आर. आई.
उदयपुर

सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नाथद्वारा (राज.)

एवं

माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर (राज.)

के

संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजस्थान का जनजातीय परिदृश्य : चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ

मार्च 05, 2021

महाविद्यालय का परिचय

श्रीनाथ जी की पावन धरा नाथद्वारा में स्थित सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना 1962 ई में हुई। यह राजसमंद जिले का सबसे पुराना एवं बड़ा महाविद्यालय है । इस शिक्षा केंद्र से अनेक विद्यार्थियों ने ज्ञानार्जन कर विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिष्ठा अर्जित की। पिछवाई चित्रशैली, कुश्ती, मीनाकारी आदि अनेक विशेषताओं हेतु विख्यात नाथद्वारा का यह महाविद्यालय शिक्षा, शोध, विभिन्न क्रीड़ाओं एवं अन्य बहुविध गतिविधियों का केंद्र हे। वर्तमान में यहाँ कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के अंतर्गत लगभग दो हजार विद्यार्थी अध्यनरत हैं । यहाँ के अधिकांश संकाय सदस्य जनजाति विषयक शोध एवं जागरूकता कार्यों से जुड़े हैं एवं विद्यार्थियों को भी इस हेतु प्रोत्साहित करते रहते हैं ।

टी. आर. आई. का परिचय

झीलों की नगरी उदयपुर में स्थित माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान (T.R.I) की स्थापना 2 जनवरी 1964 को हुई। इसका प्रमुख उद्देश्य जनजातीय शोध एवं प्रशिक्षण को प्रोत्साहन एवं सहायता प्रदान करना है। जनजातियों के सर्वांगीण विकास हेतु स्थापित इस संस्थान का नामकरण जनजाति समूह के कल्याण से जुड़े स्वतंत्रता सेनानी श्री माणिक्य लाल वर्मा के नाम पर किया गया। यह संस्थान राजस्थान के जनजाति वर्ग को मुख्य धारा से जोड़ने तथा उसके विकास हेतु अनेक कार्यो में संलग्न है। राजस्थान के जनजाति समूह के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पक्ष पर शोध को बढ़ावा देना, उन्हें विभिन्न कलाओं में प्रशिक्षण प्रदान करना आदि सभी कार्यों में यह संस्थान अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रहा है। वर्तमान में यह संस्थान आयुक्त, जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के नीतिपरक मार्गदर्शन में कार्यरत है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के विमर्श बिंदु

राजस्थान के जनजातीय सन्दर्भ में :

1. जनजातियों के साहित्यिक योगदान को रेखांकित करना।
2. जनजातियों के मौखिक साहित्य को लिपिबद्ध करने के प्रयास एवं दिशाएं।
3. आदिवासी जीवन, संस्कृति एवं परम्पराओं के अनछुए पहलुओं को उजागर करना।
4. जनजातियों के वैज्ञानिक एवं औषधीय ज्ञान का विश्लेषण एवं दिशाएं।
5. आदिवासी स्वतंत्रता - सेनानियों का योगदान।
6. जनजातियों के शैक्षणिक उन्नयन के प्रयास
7. जनजातीय कला एवं शिल्प के विभिन्न आयाम
8. जनजातीय विकास हेतु कल्याणकारी योजनायें ।
9. आदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति।
10. जनजातीय विरासतों एवं धरोहरों की पहचान एवं संरक्षण।
11. जनजातियों के समक्ष चुनौतियां एवं समस्याएं।
12. जनजातियों के विकास की संभावनाएं एवं दिशाएं।
13. जनजातियों का आर्थिक पक्ष।
14. आदिवासी विरासतों की पर्यटन स्थल के रूप में विकास की दिशाएं।
15. जनजातियों का समाज - दर्शन।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

- पूर्ण शोध पत्र भेजने की अंतिम तिथि - 25 फरवरी 2021
- सिर्फ सहभागिता हेतु पंजीकरण की अंतिम तिथि 4 मार्च 2021
- चयनित शोध आलेखों को पुस्तक (ISBN) रूप में टी. आर. आई. द्वारा प्रकाशित किया जायेगा।
- शोध आलेख संगोष्ठी के विमर्श बिंदुओं से सम्बंधित या संदर्भित होने चाहिए।
- शोधपत्र के साथ उनके मौलिक और अप्रकाशित होने का प्रमाण पत्र भी संलग्न करना अनिवार्य है।
- आयोजन समिति द्वारा चयनित शोध-पत्रों की प्रस्तुति हेतु संभागियों को सूचित कर दिया जायेगा।

संगोष्ठी का उद्देश्य

किसी भी क्षेत्र में शोध एवं अन्वेषण कार्य अपनी निरंतरता एवं नवीनता से ही सफल तथा सार्थक सिद्ध होते हैं। इसी दिशा में एक महत प्रयास इस राष्ट्रीय संगोष्ठी (ऑनलाइन) का आयोजन है। इसके अंतर्गत विभिन्न शोध - पत्रों के माध्यम से राजस्थान के जनजातीय परिदृश्य के महत्वपूर्ण बिंदुओं को परिलक्षित किया जायेगा, जिससे भविष्य में उनकी कार्यात्मक परिणति संभव हो सके।

पंजीयन लिंक

- शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले संभागियों को 25 फरवरी 2021 तक गूगल पंजीयन फॉर्म https://forms.gle/QKBqJeeWjkVhSqpQ9 भरना अनिवार्य है।
- सभी संभागियों को ई सर्टिफिकेट दिया जायेगा।
- शोध-पत्र प्रस्तुत करने वाले पंजीकृत संभागियों को प्रस्तुतीकरण का ई - सर्टिफिकेट प्रदान किया जायेगा।

शोध सार और शोध पत्र के लिए निर्देश

- सभी शोधपत्र मौलिक, अप्रकाशित हो एवं उनकी शब्द सीमा 2000- 3000 हो।
- शोध सार 200-250 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए । यह शोध पत्र के प्रारम्भ में ही शीर्षक के नीचे संलग्न होना चाहिए इसके साथ ही 4-5 कुंजी शब्द (key words) भी होने चाहिए।
- हिंदी में भेजे जा रहे शोध पत्र मंगल यूनिकोड में फॉण्ट साइज 12 में , 1.15 के स्पेस में टाइप करवाकर nwsmbn@gmail.com पर प्रेषित करे।
- शोध पत्र के अंत में उचित संदर्भीकरण जरूर करें जैसे लेखक का नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशक, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या (इस क्रम में भेजें)।
- अंग्रेजी में आलेख Times New Roman फॉण्ट में फॉण्ट साइज 12, 1.15 लाइन स्पेस में भेजें ।
- संगोष्ठी सम्बंधित जानकारी के लिए संपर्क सूत्र - डॉ शिल्पा मेहता - 9460029399, डॉ प्रीति भट्ट – 9928495570